Purva Mimaansa | Refereed | Peer Reviewed
ISSN: 0976-0237 | Volume 17, Issue: March 2026 | Impact Factor 5.275

समकालीन बाल साहित्य की प्रवृत्तियां

लीना गोयल
हिन्दी विभाग, सनातन धर्म कॉलेज, अंबाला छावनी

सारांश

यह शोध-पत्र "21वीं सदी की कहानियों में बाल साहित्य" समकालीन बाल-कथाओं की प्रवृत्तियों, विषय-विस्तार, शिल्प और सामाजिक प्रभाव का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि 21वीं सदी में बाल साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं रहा, बल्कि बच्चों के ज्ञानात्मक विकास, नैतिक मूल्यों, सामाजिक संवेदनशीलता और सांस्कृतिक पहचान के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभा रहा है। तकनीकी प्रगति, वैश्वीकरण, पर्यावरणीय संकट, लैंगिक समानता, मानसिक स्वास्थ्य और डिजिटल नागरिकता जैसे विषय अब बाल-कथाओं के केंद्र में हैं। कथाओं का शिल्प भी विविध हुआ है—पिक्चर-बुक, ग्राफिक नॉवेल, डायरी-रूप, चैट-लॉग और क्रिया-आधारित कहानी बच्चों के अनुभव-संसार से संवाद करते हैं। भाषा-शैली में बोलचाल की जीवंतता और बहुभाषिकता का समावेश बच्चों को अपनी जड़ों से जोड़ते हुए विश्व-दृष्टि प्रदान करता है। शोध यह भी रेखांकित करता है कि शिक्षा और पुस्तकालय संस्कृति में बाल साहित्य का उपयोग सीखने को जीवंत बनाता है। प्रकाशन उद्योग की चुनौतियों के बावजूद, गुणवत्तापूर्ण सामग्री, सांस्कृतिक विविधता और समावेशी दृष्टि बाल साहित्य को भविष्य में और सशक्त बनाएगी। 21वीं सदी की कहानियाँ बच्चों को केवल 'सही उत्तर' नहीं देतीं, बल्कि उन्हें प्रश्न पूछने, सहानुभूति रखने, जिम्मेदारी निभाने और बेहतर समाज की कल्पना करने के लिए प्रेरित करती हैं। यही समकालीन बाल साहित्य का सबसे बड़ा योगदान है।

प्रस्तावना

21वीं सदी में बाल साहित्य की कहानियाँ अब केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रह गई हैं। वे बच्चों के ज्ञानात्मक विकास, भावनात्मक समझ, सामाजिक संवेदनशीलता और सांस्कृतिक पहचान के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। डिजिटल तकनीक, वैश्वीकरण, शिक्षा नीतियों में आए बदलाव, परिवार की संरचना में परिवर्तन और पर्यावरण से जुड़े संकटों ने बच्चों की दुनिया को नए अनुभवों और प्रश्नों से भर दिया है। इन परिस्थितियों में बाल साहित्य बच्चों के लिए केवल कल्पना का संसार नहीं रचता, बल्कि उनके वास्तविक जीवन से जुड़कर उन्हें सोचने और समझने की दिशा देता है।

इस शोध का उद्देश्य 21वीं सदी की बाल कहानियों में दिखाई देने वाली नई प्रवृत्तियों, कथ्य और शिल्प, भाषा और शैली, चरित्र-निर्माण, नैतिक दृष्टिकोण और पाठकों पर पड़ने वाले प्रभाव का समग्र अध्ययन करना है। इसके माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि

PURVA MIMAANSA

समकालीन बाल कहानियाँ किस प्रकार बच्चों के अनुभवों को अर्थ प्रदान करती हैं और उन्हें भविष्य के जिम्मेदार नागरिक के रूप में तैयार करती हैं। शोध का मुख्य केंद्र हिंदी बाल साहित्य है, किंतु आवश्यकतानुसार अन्य भारतीय भाषाओं और वैश्विक बाल साहित्य की प्रवृत्तियों का तुलनात्मक संकेत भी दिया गया है।

हिंदी बाल साहित्य का विकास उन्नीसवीं और बीसवीं सदी में मुख्य रूप से नैतिक शिक्षा देने वाली कथाओं, लोककथाओं, पंचतंत्र परंपरा, परीकथाओं और राष्ट्रनिर्माण से जुड़े आदर्शों के साथ हुआ। स्वतंत्रता के बाद नंदन, चंपक, पराग और बालहंस जैसी बाल पत्रिकाओं ने बच्चों के लिए एक समृद्ध कथा-संसार का निर्माण किया, जिसमें कल्पना, साहस और नैतिक मूल्यों का संतुलन देखने को मिलता है। इन रचनाओं ने बच्चों को मनोरंजन के साथ-साथ जीवन के मूल संस्कार भी प्रदान किए।

इक्कीसवीं सदी में प्रवेश करते ही यह परिदृश्य तेजी से बदलने लगा। इंटरनेट, स्मार्टफोन, स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म, ऑनलाइन गेम और सोशल मीडिया ने बच्चों के अवकाश, सीखने की प्रक्रिया और आपसी संबंधों को नई दिशा दी। इसका सीधा प्रभाव बाल कहानियों पर पड़ा। अब कहानियों में जादुई कल्पना के साथ-साथ जीवन की वास्तविक परिस्थितियाँ भी शामिल होने लगीं। तकनीक से जुड़ी समस्याएँ, पर्यावरण के प्रति चिंता, लैंगिक समानता, विविधता और समावेशन, मानसिक स्वास्थ्य, प्रवासन, शहरी और ग्रामीण जीवन का अंतर तथा डिजिटल नागरिकता जैसे विषय बाल साहित्य में प्रमुख रूप से दिखाई देने लगे। यह परिवर्तन केवल विषयों तक सीमित नहीं है, बल्कि कथा की संरचना, भाषा के प्रयोग और बच्चों की सक्रिय भागीदारी के स्तर पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। अब की बाल कहानियाँ बच्चों को केवल कहानी सुनने वाला श्रोता नहीं मानतीं, बल्कि उन्हें प्रश्न पूछने, सोचने और निर्णय लेने वाला सक्रिय पाठक मानती हैं। बच्चे कहानी के साथ जुड़ते हैं और उसमें भागीदार बनते हैं।

21वीं सदी की बाल कहानियों में तकनीक एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और कई बार वह कहानी के एक पात्र के रूप में भी उपस्थित रहती है। बच्चे इन कहानियों में चैटबॉट, रोबोट, कोडिंग, साइबर सुरक्षा, डेटा की गोपनीयता और ऑनलाइन मित्रता जैसे अनुभवों से गुजरते हैं। कहानियाँ इन अनुभवों को नैतिक और भावनात्मक संदर्भ देती हैं। उदाहरण के लिए, कुछ कहानियों में बच्चा ऑनलाइन खेल में जीतने के लिए गलत तरीकों का प्रलोभन झेलता है, लेकिन अंत में ईमानदारी और सहयोग को चुनता है। दूसरी कहानियों में बच्ची अपने दादा की डिजिटल तस्वीरों को सुरक्षित रखकर परिवार की स्मृतियों को नए अर्थ देती है।

पर्यावरण से जुड़े संकट जैसे जलवायु परिवर्तन, प्लास्टिक प्रदूषण और जैव-विविधता का घटता स्तर भी 21वीं सदी की बाल कहानियों में महत्वपूर्ण विषय के रूप में सामने आते हैं। इन कहानियों में पर्यावरण के प्रति चिंता केवल समस्या के रूप में नहीं दिखाई जाती, बल्कि समाधान की दिशा में किए जाने वाले छोटे-छोटे प्रयासों को भी महत्व दिया जाता है। बच्चे कहानी के माध्यम से यह सीखते हैं कि पर्यावरण की रक्षा केवल बड़े अभियानों से नहीं, बल्कि रोज़मर्रा के व्यवहार में बदलाव से भी संभव है। स्कूल में प्लास्टिक का कम उपयोग करना, घर में जैविक खाद

PURVA MIMAANSA

बनाना, स्थानीय तालाब की सफाई करना या पक्षियों के लिए पानी रखना जैसे कार्य कहानियों में स्वाभाविक रूप से जुड़े होते हैं। इस प्रकार कहानी बच्चों को सामूहिक प्रयास, वैज्ञानिक समझ और दूरदर्शी सोच से परिचित कराती है।

लैंगिक समानता और समावेशन के संदर्भ में 21वीं सदी की बाल कहानियाँ पारंपरिक धारणाओं को चुनौती देती हैं। इन कहानियों में लड़कियाँ केवल सहायक या कमजोर पात्र नहीं होतीं, बल्कि वैज्ञानिक, पर्वतारोही, तकनीकी विशेषज्ञ, खिलाड़ी, ग्राम-नेता और पर्यावरण कार्यकर्ता के रूप में सामने आती हैं। वहीं लड़कों को भी संवेदनशील, देखभाल करने वाले, कला में रुचि रखने वाले और सहयोगी भूमिका में दिखाया जाता है। ट्रांस और नॉन-बाइनरी पहचान वाले पात्रों, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों और विभिन्न भाषाई व सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों से आए पात्रों को भी सम्मानजनक और सहज रूप में प्रस्तुत किया जाता है। यह समावेशन केवल प्रतिनिधित्व तक सीमित नहीं रहता, बल्कि बच्चों में सहानुभूति, विविधता को स्वीकार करने और सामाजिक न्याय की भावना विकसित करने का माध्यम बनता है।

मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े विषय भी समकालीन बाल कहानियों में संवेदनशीलता के साथ शामिल किए गए हैं। चिंता, अकेलापन, परीक्षा का दबाव, शोक और पारिवारिक परिस्थितियों से उत्पन्न भावनात्मक तनाव को सरल और समझने योग्य भाषा में प्रस्तुत किया जाता है। ऐसी कहानियाँ बच्चों की भावनाओं को स्वीकार्यता देती हैं और उन्हें यह समझने में मदद करती हैं कि अपनी परेशानी साझा करना और सहायता लेना स्वाभाविक है। इन कहानियों में परिवार और विद्यालय का सहयोगी वातावरण भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे बच्चे स्वयं को सुरक्षित महसूस करते हैं।

समकालीन बाल कहानियों का शिल्प बहुआयामी होता जा रहा है। अब केवल सीधी और रेखीय कथा ही नहीं, बल्कि छोटे-छोटे प्रसंगों में बँटी कहानियाँ, डायरी के रूप में लिखी रचनाएँ, ईमेल और चैट के माध्यम से आगे बढ़ती कथाएँ, ग्राफिक नॉवेल और चित्र-पुस्तकों का प्रयोग बढ़ा है। यह शिल्प बच्चों के डिजिटल अनुभवों से जुड़ता है, जहाँ वे स्क्रीन पर पढ़ने, स्क्रॉल करने और दृश्य संकेतों के साथ कहानी को समझने के आदी हैं। इसके बावजूद भाषा की सरलता, प्रवाह और अर्थ की गहराई बनाए रखने का प्रयास किया जाता है, ताकि कहानी केवल दिखावटी न रह जाए, बल्कि बच्चों को सोचने का अवसर दे।

हिंदी बाल कहानियों में बोलचाल की भाषा, स्थानीय मुहावरों और क्षेत्रीय शब्दों का प्रयोग बच्चों को अपनी परिचित दुनिया से जोड़ता है। साथ ही मानक हिंदी का संतुलित प्रयोग उन्हें व्यापक पाठक समुदाय से जोड़ने का काम करता है। अनुवाद और रूपांतरण की प्रक्रिया ने भी बाल साहित्य को समृद्ध किया है। विभिन्न भारतीय भाषाओं और विदेशी भाषाओं की अच्छी बाल कहानियाँ हिंदी में उपलब्ध हो रही हैं और हिंदी की रचनाएँ अन्य भाषाओं में पहुँच रही हैं। इससे बाल साहित्य में सांस्कृतिक विविधता और शैलीगत विस्तार देखने को मिलता है।

चित्रांकन और मुद्रण शैली का महत्व भी 21वीं सदी में बढ़ा है। चित्र-पुस्तकों में चित्र केवल सजावट नहीं रहते, बल्कि कहानी के अर्थ को आगे बढ़ाने में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। रंगों

का संयोजन, खाली स्थान का प्रयोग और प्रतीकात्मक चित्र बच्चों की कल्पना शक्ति को सक्रिय करते हैं। ग्राफिक नॉवेल में चित्रों की क्रमबद्धता और संवाद-बुलबुले कथा को गति प्रदान करते हैं। डिजिटल प्रकाशन में ध्वनि और हल्के एनिमेशन का प्रयोग कहानी को अधिक रोचक बनाता है, हालांकि अधिक उत्तेजना से बचना आवश्यक माना जाता है, ताकि बच्चे का ध्यान और समझ प्रभावित न हो।

21वीं सदी की बाल कहानियाँ नैतिक मूल्यों को सीधे उपदेश के रूप में प्रस्तुत नहीं करतीं। ये कहानियाँ बच्चों को परिस्थितियों के माध्यम से सही और गलत के बीच अंतर समझने का अवसर देती हैं। बच्चे कहानी में पात्रों के निर्णय देखते हैं, उनके परिणाम समझते हैं और स्वयं निष्कर्ष तक पहुँचते हैं। इससे उनमें सहानुभूति, न्याय, ईमानदारी, साहस और सहयोग जैसे मूल्यों की समझ विकसित होती है। आधुनिक बाल कहानियाँ नैतिकता को केवल सही और गलत के सरल भेद तक सीमित नहीं रखतीं, बल्कि परिस्थितियों के अनुसार निर्णय लेने की समझ विकसित करती हैं। कई कहानियों में यह दिखाया जाता है कि कभी नियमों का पालन करना आवश्यक होता है, तो कभी करुणा और मानवीय संवेदना नियमों से अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। इस प्रकार की कथाएँ बच्चों को जटिल जीवन स्थितियों को समझने और संतुलित निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती हैं।

आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देने के लिए समकालीन बाल कहानियाँ प्रश्नों और खोज की भावना को केंद्र में रखती हैं। बच्चे कहानी के माध्यम से वैज्ञानिक सोच अपनाते हैं, जानकारी के स्रोतों की जाँच करना सीखते हैं और अफवाह तथा तथ्य के बीच अंतर समझते हैं। डिजिटल माध्यमों के बढ़ते प्रभाव के कारण कहानियाँ बच्चों को जिम्मेदार ऑनलाइन व्यवहार, सही जानकारी की पहचान और सुरक्षित डिजिटल आदतों के प्रति भी जागरूक करती हैं। इससे बच्चे भविष्य की तकनीक-प्रधान दुनिया में अधिक सजग और समझदार नागरिक बनते हैं।

नई शिक्षा नीतियों और कौशल-आधारित शिक्षा के साथ बाल कहानियों का शैक्षिक उपयोग भी बढ़ा है। भाषा सीखने, विज्ञान की समझ विकसित करने, गणितीय सोच और सामाजिक विषयों को सरल बनाने में कहानियाँ प्रभावी साधन के रूप में उभर रही हैं। कक्षा में कहानी-पाठ, नाट्य रूपांतरण, चित्र-निर्माण, समूह चर्चा और परियोजना आधारित गतिविधियाँ बच्चों की सक्रिय सहभागिता को बढ़ाती हैं। इन गतिविधियों से बच्चे केवल पाठ्य सामग्री नहीं सीखते, बल्कि सहयोग, अभिव्यक्ति और रचनात्मकता भी विकसित करते हैं। विद्यालय और सामुदायिक पुस्तकालय बच्चों के पठन विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विविध पुस्तकों का संग्रह, आयु के अनुसार वर्गीकरण, शांत और सहज पठन वातावरण तथा प्रशिक्षित पुस्तकालयाध्यक्ष बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। डिजिटल पुस्तकालय और ऑडियो पुस्तकों ने पुस्तकों तक पहुँच को आसान बनाया है, विशेष रूप से उन बच्चों के लिए जिनके पास छपी हुई किताबें आसानी से उपलब्ध नहीं हैं। इसके बावजूद स्क्रीन समय और ध्यान के संतुलन पर लगातार विचार करना आवश्यक बना हुआ है। ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों में चलित पुस्तकालय, पढ़ो-गाँव जैसे अभियान और स्थानीय भाषा में तैयार की गई सामग्री बच्चों तक किताबें पहुँचाने के प्रभावी प्रयास हैं। इन पहलों से पठन-संस्कृति का विस्तार होता है और बच्चों को अपनी भाषा और संस्कृति

PURVA MIMAANSA

से जुड़ने का अवसर मिलता है।

21वीं सदी में बाल पुस्तक प्रकाशन का स्वरूप भी विविध हुआ है। बड़े प्रकाशन समूहों के साथ-साथ स्वतंत्र प्रकाशक, स्वयं-प्रकाशन, क्राउडफंडिंग, ई-बुक और ऑडियो प्लेटफॉर्म ने लेखकों और पाठकों के लिए नए अवसर खोले हैं। इसके साथ ही बाज़ार की माँग के अनुसार सामग्री तैयार करने का दबाव भी बढ़ा है, जिससे गुणवत्ता बनाए रखना एक चुनौती बन गया है। बाल साहित्य की गुणवत्ता केवल भाषा की शुद्धता तक सीमित नहीं होती, बल्कि शोध पर आधारित विषयवस्तु, सांस्कृतिक संवेदनशीलता, आयु के अनुरूप प्रस्तुति, चित्रों की मौलिकता और पुस्तक की समग्र प्रस्तुति भी उतनी ही महत्वपूर्ण होती है। स्वतंत्र समीक्षाएँ, पुरस्कार, शिक्षकों और पुस्तकालयाध्यक्षों की सिफारिशें अच्छी पुस्तकों की पहचान में सहायक होती हैं। लेखकों के लिए कॉपीराइट, रॉयल्टी और डिजिटल वितरण से जुड़ी शर्तों की स्पष्टता भी आवश्यक है, ताकि उनके रचनात्मक कार्य का सम्मान बना रहे।

भारत की भाषिक और सांस्कृतिक विविधता बाल साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता है। 21वीं सदी की बाल कहानियाँ जब लोककथाओं, मिथकों, त्योहारों, भोजन, परिधान, खेल, संगीत और प्राकृतिक परिवेश को आधुनिक दृष्टि के साथ जोड़ती हैं, तो बच्चे अपनी जड़ों से जुड़े रहते हुए व्यापक दुनिया को समझ पाते हैं। बहुभाषिकता बच्चों की सोच को लचीला बनाती है और उन्हें विभिन्न संस्कृतियों के प्रति सहिष्णु बनाती है। जब कहानियों में दो या अधिक भाषाओं का सहज प्रयोग होता है, तो भाषा सीखने की प्रक्रिया स्वाभाविक और आनंददायक बन जाती है। प्रवासन तथा शहरी और ग्रामीण जीवन के अंतर पर आधारित कहानियाँ बच्चों के सामने 'घर' और 'पहचान' जैसे प्रश्नों को संवेदनशील ढंग से रखती हैं और यह समझ विकसित करती हैं कि विविधता टकराव नहीं, बल्कि संवाद और सीख का अवसर है।

ऑनलाइन दुनिया बच्चों के लिए अनेक अवसरों के साथ-साथ कुछ जोखिम भी लेकर आती है। 21वीं सदी की बाल कहानियाँ साइबर बुलिंग, निजी जानकारी की सुरक्षा, स्क्रीन समय, झूठी खबरों और ऑनलाइन व्यवहार जैसे विषयों को उम्र के अनुसार सरल भाषा में समझाती हैं। इन कहानियों का उद्देश्य बच्चों में भय पैदा करना नहीं, बल्कि उन्हें जागरूक और सक्षम बनाना होता है। बच्चे सुरक्षित पासवर्ड बनाना, संदिग्ध संदेशों को पहचानना और ज़रूरत पड़ने पर बड़ों से मदद लेना सीखते हैं। परिवार और विद्यालय को भी कहानी में सहयोगी भूमिका में दिखाया जाता है, जिससे तकनीक के उपयोग को लेकर संवाद और समझ का वातावरण बनता है।

बीमारी, विकलांगता, पारिवारिक विघटन, आपदा, संघर्ष और शोक जैसे कठिन विषयों को प्रस्तुत करना बाल साहित्य के लिए एक चुनौती रहा है। समकालीन बाल कहानियाँ इन विषयों को संवेदना और यथार्थ के संतुलन के साथ प्रस्तुत करती हैं। भाषा में डर या अतिनाटकीयता से बचते हुए, प्रतीकों और रूपकों के माध्यम से बच्चों को अपनी भावनाओं को समझने का अवसर दिया जाता है। सूखता हुआ पेड़, टूटी पतंग या खोया हुआ खिलौना जैसे बिंब बच्चों को कठिन अनुभवों से सुरक्षित दूरी बनाकर जुड़ने में मदद करते हैं। इन कहानियों का अंत आशावादी होता है, लेकिन अवास्तविक समाधान नहीं देता। इससे बच्चों में धैर्य, आत्म-विश्वास और भावनात्मक

मजबूती विकसित होती है।

समकालीन बाल कहानियाँ पाठक की सक्रिय भूमिका को महत्व देती हैं। बच्चे कहानी के अर्थ को समझने और गढ़ने की प्रक्रिया में भाग लेते हैं। कक्षा और पुस्तकालय में खुले पठन, चर्चा, वैकल्पिक अंत की कल्पना, पात्रों के नाम पत्र लिखना और नाट्य रूपांतरण जैसी गतिविधियाँ बच्चों की रचनात्मकता और समझ को बढ़ाती हैं। मूल्यांकन की प्रक्रिया भी केवल प्रश्नोत्तरी तक सीमित न रहकर पठन-अनुभव, आत्ममूल्यांकन और समूह प्रतिक्रिया के रूप में सामने आती है। इस तरह कहानी बच्चों के लिए केवल पाठ नहीं रहती, बल्कि एक जीवंत अनुभव बन जाती है।

21वीं सदी में बाल कथा लेखन अधिक शोध-आधारित और पाठक-केंद्रित हुआ है। लेखक बच्चों से संवाद करते हैं, विद्यालयों में कार्यशालाएँ आयोजित करते हैं और मनोवैज्ञानिकों तथा शिक्षाविदों से परामर्श लेते हैं। लेखन में दृश्यात्मकता, स्वाभाविक संवाद, कथा की गति और संतोषजनक अंत पर विशेष ध्यान दिया जाता है। आयु-समूह के अनुसार भाषा, वाक्य संरचना और विचारों की गहराई तय की जाती है। चित्रकार के साथ सहयोग कहानी को और प्रभावशाली बनाता है, जहाँ पाठ और चित्र मिलकर अर्थ का निर्माण करते हैं। संपादन और भाषा की शुद्धता पाठक का विश्वास बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बाल साहित्य की आलोचना अब केवल उसकी उपयोगिता तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि उसके सौंदर्य, विचारधारा, शिल्प और पाठकीय प्रभाव पर भी ध्यान दिया जा रहा है। विश्वविद्यालयों में बाल साहित्य पर शोध, संगोष्ठियाँ और अकादमिक चर्चाएँ इस क्षेत्र को गंभीर अध्ययन का विषय बनाती हैं। विभिन्न पुरस्कार और फैलोशिप लेखकों और चित्रकारों को प्रोत्साहित करती हैं। नीतिगत स्तर पर पुस्तकालयों का विकास, विद्यालयों में पठन के लिए समय निर्धारित करना, स्थानीय भाषाओं में सामग्री तैयार करना और दिव्यांग बच्चों के लिए सुलभ प्रारूप उपलब्ध कराना आवश्यक माना जा रहा है।

21वीं सदी में बाल साहित्य के सामने कुछ स्थायी चुनौतियाँ भी बनी हुई हैं, जैसे स्क्रीन समय का संतुलन, ध्यान भंग की समस्या, बाज़ार-प्रधान सामग्री और गुणवत्ता नियंत्रण। इसके साथ ही संभावनाएँ भी व्यापक हैं। समुदाय आधारित पठन अभियान, स्थानीय कथाकारों का उभार, बहुभाषिक प्रकाशन और अंतरराष्ट्रीय सहयोग बाल साहित्य को नई दिशा दे रहे हैं। यदि लेखक, शिक्षक, अभिभावक, प्रकाशक और नीति-निर्माता मिलकर कार्य करें, तो बाल साहित्य बच्चों के लिए आनंद के साथ-साथ जीवन मूल्यों का मजबूत आधार बन सकता है। 21वीं सदी की बाल कहानियों में बाल साहित्य ने विषय, भाषा, शिल्प और पाठकीय सहभागिता के स्तर पर उल्लेखनीय विस्तार और परिपक्वता प्राप्त की है। समकालीन कहानियाँ बच्चों को तैयार उत्तर देने के बजाय उन्हें सोचने, प्रश्न करने और समझ विकसित करने के लिए प्रेरित करती हैं। तकनीक, पर्यावरण, समावेशन और मानसिक स्वास्थ्य जैसे विषयों को संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करते हुए ये कहानियाँ बच्चों को जिम्मेदार, सहानुभूतिशील और जागरूक नागरिक बनने की दिशा में आगे बढ़ाती हैं। यही 21वीं सदी के बाल साहित्य का मूल उद्देश्य और सबसे बड़ा योगदान है।

PURVA MIMAANSA

संदर्भ सूची

देवेंद्र कुमार. बाल साहित्य का स्वरूप और विकास. राजकमल प्रकाशन, 2015.

सुधा भार्गव. 21वीं सदी का बाल साहित्य: प्रवृत्तियाँ और चुनौतियाँ. साहित्य अकादमी, 2018.

बालहंस (हिंदी). विभिन्न अंक, 2010–2024.s

UNESCO. Children's Literature in the Digital Age. 2022

विभिन्न भारतीय भाषाओं की बाल पत्रिकाएँ और पिक्चर-बुक प्रकाशन—प्रेमचंद बाल पुस्तिका श्रृंखला, एकलव्य, टुलिका, प्रथम बुक्स—विभिन्न शीर्षक, 2008–2025.

समकालीन शोध-पत्र और संगोष्ठी कार्यवाहियाँ—हिंदी बाल साहित्य सम्मेलन, 2019; भारतीय बाल पुस्तक मेले की चर्चाएँ, 2021–2024.

PURVA MIMAANSA